वह स्त्री शशी ब्राह्मण की ऊई. तब बैताल बोला गर्भ उस ब्राह्मण का; जोरू इस की किस तरह से ऊई? राजा ने कहा कि उस ब्राह्मण का पेट रखवाया ऊआ तो किसूने मअ्लूम न किया. और इन्ने दस पचों में बैठके शादी की. इस लिये इस की जोरू ठहरी. और वह लड़का भी इसी की क्रिया कर्म का अधिकारी होगा. यह बात सुन, बैताल उसी रूख में जा लटका. फिर राजा गया; और बैताल को बांध, कांधे पर रख, ले चला.

पंदरहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! हिमाचल नाम एक पर्वत है. तहां गंधर्व का नगर है. और वहां का राज राजा जीमूतकेतु करता था. एक समें उसने पुच के अर्थ कल्पवृक्ष की बऊतसी पूजा की. तब कल्पवृक्ष खुश होके बोला ऐ राजा! तेरी सेवा देख मैं संतुष्ट ऊआ; जो तू चाहे सो बर मांग. राजा ने कहा कि एक पुच मुझे देा जो मेरा राज और नाम रहै. उन्ने कहा ऐसाही होगा.

कितने दिनों के बअ्द, राजा के बेटा ऊआ. उसे निहायत खुशी ऊई; और बड़ी धूम से शादी की. बऊत सा दान पुन्य कर, ब्राह्मणों को बुला, उस का नाम करन

किया. ब्राह्मणों ने उस का नाम जीमूतबाहन(१) धरा. जब कि वह बारह बरस का ऊआ, तब शिव की पूजा करने लगा; और सब शास्त्र पढके बड़ाई ज्ञानी, ध्यानी, साहसी, सूरबीर, धर्मात्मा, पंडित ऊआ. उस समें उसकी बराबर कोई न था. और जितने उस के राज में लोग थे, वे सब अपने अपने धर्म में सावधान थे.

जब वह जवान ऊआ तो उन्ने भी कल्पवृक्ष की बऊत सेवा की. तब कल्पवृक्ष ने प्रसन्न हो उससे कहा जिस बात की तुझे इच्छा हेा सो मांग, मैं तुझे दूंगा. फिर जीमूतबाहन बोला जो तुम मुझसे प्रसन्न ऊए हेा तो मेरी सब रऐयत का दरिद्र दूर करो; और जितने लोग मेरे राज में हैं सब माल और दौलत से बराबर हेा जावें. तब कल्पवृक्ष ने बर दिया. सब लोग धन से ऐसे आसूदः ऊए कि कोई किसी का ऊकम न मानता था, और कोई किसी का काम न करता.

जब उस राज के लोग ऐसे हो गये, तब जो भाई बंध उस राजा के थे, वे आपस में बिचार करने लगे कि बाप बेटे तो दोनों धर्म के बस ऊए; और लोग इन का ऊकम नहीं मानते. इससे उत्तम यह है, कि इन दोनों को पकड़के क़ैद कीजिये, और राज इन का छीन लीजिये. ग़रज़, राजा तो उन्हों की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहा. और उन्हों ने, आपस में मनसूबः बांध, फ़ौज ले, राजा का मंदिर जा घेरा.

---

(१) जीमूतवाहन.

जब यह ख़बर राजा को पहुंची, तब राजा ने अपने बेटे से कहा अब क्या करें. राजकुमार बोला महाराज! आप यहां बिराजिये; आप के धर्म से, अभी जाके उन्हें मार लेता हूं. राजा ने कहा ऐ पुत्र! यह शरीर अनित्य है; और धन भी अस्थिर है. जब आदमी जनमा तो मृत्यु भी उसके साथ है. इससे अब राज छोड़ धर्म काज किया चाहिये. ऐसे शरीर के कारन, और इस राज के वास्ते, महापाप करना उचित नहीं. क्योंकि राजा युधिष्ठिर भी महाभारत करके पीछे पछताये थे. यह सुन उसके बेटे ने कहा अच्छा, राज अपना गोतियों को दीजिये, और आप चलके तपस्या कीजिये.

यह बात ठहरा, भाई भतीजों को बुलवा राज दे, दोनों बाप बेटे मलयाचल पर्वत के ऊपर गये, और वहां जा कुटी बना रहने लगे. जीमूतबाहन से और एक ऋषी के बेटे से दोस्ती हुई. एक दिन, उस पर्वत के ऊपर, राजा का बेटा और ऋषी का बेटा सैर के वास्ते गये. वहां एक भवानी का मंदिर नज़र आया. उस मंदिर में एक राजकन्या बीन लिये हुए देवी के आगे गा रही थी. उस कन्या की और जीमूतबाहन की चार नज़रें हुईं; और दोनों को लगन लग गई. पर राजकन्या मनमार लाज की मारी अपने घर को पधारी. और इधर यह भी, उस ऋषी के बेटे की शर्म के मारे, अपने स्थान पर आया. वह रात, उन दोनों गुलउज़ारों को, निहायत बेकली से कटी.

सुबह के होते ही, उधर से राजकन्या देवी के मंदिर को गई. और इधर से राजकुमार ने भी जाते ही देखा कि राजकन्या भी है. तब इसने उसकी सखी से पूछा यह किसकी कन्या है. सखीने कहा यह मलयकेतु राजा की पुत्री है. मलयावती(१) इसका नाम. और अभी कुमारी है. यह कह फिर सखीने इस राजपुत्र से पूछा कहो सुन्दर पुरुष! तुम कहांसे आये हो; और तुम्हारा क्या नाम है. यह बोला विद्याधरों का राजा जीमूतकेतु नाम; तिसका मैं सुत हूं. और जीमूतबाहन मेरा नाम. राजके भंग होनेसे पिता पुत्र हम यहां आनके रहे हैं.

फिर सखीने ये बातें सुनकर सारी राजकन्या से कहीं. यह सुन अपने जी में बहुत दुख पाय घर को आई, और रात को चिंता करके सो रही. पर यह दसा इसकी देख, सखीने वह वृतान्त इसकी माके आगे ज़ाहिर किया. रानी ने सुनकर राजा के आगे बयान किया; और कहा महाराज! पुत्री आप की बरजोग हुई है. इस का बर क्यों नहीं ढूंढते. यह सुनके, राजा ने अपने जी में चिंता कर, उसी समैं मित्रावसू(२) नाम अपने पुत्र को बुलाकर कहा बेटा! अपनी बहिन का बर ढूंढ लाओ. तब वह बोला कि महाराज! गंधर्वों का राजा जीमूतकेतु नाम. तिस का पुत्र जीमूतबाहन नाम. राज छोड़ पिता पुत्र दोनों, सुना है कि, यहां आये हैं. यह सुन मलयकेतु राजा ने कहा यह पुत्री जीमूतबाहन को दूंगा.

(१) मलयवती. (२) मित्रावसु.

इतना कह बेटे को आज्ञा दी, कि पुच! जीमूतवाहन राजकुमार को राजा के पास से जाकर बुला लाओ. यह राजा का हुक्म पाकर उसी मकान पर गया; और वहां जाकर उस के पिता से कहा अपने पुच को हमारे साथ कर देा; कि हमारे पिताने कन्यादान देने को बुलाया है. यह सुनके राजा जीमूतकेतु ने अपने बेटे को साथ कर दिया. और वह यहां आया. फिर मलयकेतु राजा ने उसका गंधर्व बिवाह कर दिया. जब कि इसकी शादी हेा चुकी, तब दुलहन को और मित्रावसू को अपने स्थान पर लेकर आया. फिर इन तीनों ने राजा को दंडवत की. और राजा ने भी उन्हें असीस दी. वह दिन तो योंहीं गुज़रा.

लेकिन दूसरें दिन सुबह को उठतेही दोनों राजकुमार उस मलयागिर(१) पर्वत पर फिरने को गये. वहां जाकर जीमूतबाहन क्या देखता है कि एक सुफ़ैद ढेर ऊंचा सा है. तब इसने अपने साले से पूछा भाई! यह धौला ढेर कैसा नज़र आता है. वह बोला पाताल लेाग से करोड़ों नागकुमार यहां आते हैं. तिन्हें गरुड़ आनके खाता है. यह उन्हीं के हाड़ों का ढेर है. यह सुनके, जीमूतबाहन ने साले से कहा मित्र! तुम घर जाके भेाजन करेा. क्यौंकि मैं इस समें अपनी नित्य पूजा करता हूं; कि मेरे पूजा करने का अब वक्त ऊआ है.

यह सुनके, वह तेा गया; और जीमूतबाहन आगे

(१) मलयगिरि.

को जो बढ़ा तेा रोने की आवाज़ आने लगी. उसी आवाज़ की धुन पर चला चला वहां जो पहुंचा तेा क्या देखता है कि एक बुढ़िया दुख से व्याकुल हेा रेाती है. उसके पास जाके पूछा ऐ माता! तू किस कारन रेाती है. तब वह बोली कि संखचूड़(१) नाम नाग जो मेरा बेटा है, तिसकी आज बारी है. उसे गरुड़ आके खा जावेगा. इस दुख से मैं रेाती हूं. इनने कहा हे माता! मत रेा; तेरे पुच के बदले मैं अपना प्रान दूंगा. बुढ़िया बोली बेटा! ऐसा मत कीजियेा. तूही मेरा संखचूड़ है.

यह कहती थी, कि इतने में संखचूड़ भी आन पहुंचा. और उसने सुनके कहा ऐ महाराज! मुझ से दरिद्री बहुत से पैदा हेाते हैं, और मरते हैं. पर आप से धर्मात्मा दयावन्त संसार में घड़ी घड़ी पैदा नहीं हेाते. इससे आप मेरे पलटे अपना जी न दीजिये. क्यौंकि आप के जीते रहने से लाखों आदमियों का उपकार हेागा. और मेरा जीना मरना दोनों बराबर हैं. तब जीमूतबाहन बोला कि यह सत पुरुषों का धरम नहीं है जो मुह से कहके न करें. तू जहां से आया है वहीं को जा.

यह सुनके, संखचूड़ तेा देवी के दर्शन को गया. और आकाश से गरुड़ उतरा. इतने में राजकुमार देखता क्या है, पांव तेा उसके चार चार बांस बराबर हैं, और ताड़ सी लंबी चोंच, पहाड़ के समान पेट, फाटक की मानंद आंखें, और घटा से पर; एका एकी चोंच पसार

(१) शङ्खचूड़.

राजपुच पर दौड़ा. पहले तो राजपुच ने अपने तईं बचाया. पर दूसरी बेर वह चोंच में रख इसको ले उड़ा और चक्कर मारने लगा. इतने में एक बाजूबंद, कि उसके नग पर राजा का नाम खुदा हुआ था, वह खुलकर लोहूभरा राजकन्या के सनमुख गिरा. वह उसको देख. कर मुर्छा खा गिर पड़ी.

जब, एक घड़ी के बअ्द, चेती तो उसने सब वृत्तान्त अपने माता पिता से कहला भेजा. वे यह बिपता सुनकर आये, गहना रुधिर भरा देख रोये. और तीनों आदमी ढूंढने को निकले, कि रस्ते में इनहें संखचूड़ भी मिला, और उनसे बढ़कर अकेला वहां गया, जहां राजकुमार को देखा था; और पुकार पुकार कहने लगा ऐ गरुड़! छोड़ दे छोड़ दे. यह तेरा भच्छ नहीं है. संखचूड़ मेरा नाम है. मैं तेरा भच्छ हूं.

यह सुनके गरुड़ घबराकर गिरा, और अपने जी में सोचा कि ब्राह्मण या चची मैं ने खाया. यह क्या किया. फिर इस राजपुच से कहने लगा ऐ पुरुष! सच कह, किस लिये अपना जी देता है? राजकुमार बोला ऐ गरुड़! वृच्छ छाया करते हैं औरों के ऊपर, और आप धूपमें बैठे फूलते फलते हैं पराऐ वास्ते. अच्छे पुरुषों का और वृच्छों का यही धरम है. जो यह देह गैर के काम न आवे तो इस शरीर से क्या प्रयोजन है. मसल मशहूर है कि जों जों चंदन को घिसते हैं, त्यों त्यों दूनी दूनी सुगंध देता है. और जों जों छील छील, काट काट,

टुकड़े टुकड़े करते हैं, त्यों त्यों ईख अधिक अधिक स्वाद देता है. जों जों कंचन को जलाते हैं, त्यों त्यों अति सुन्दर होता जाता है. उत्तम लोग जो हैं सो प्रान जाने से भी अपना सुभाव नहीं छोड़ते. उन्हें किसी ने भला कहा तो क्या, और बुरा कहा तो क्या. दौलत रही तो क्या, जो न रही तो क्या. अभी मरे तो क्या, और बअ्द मुद्दत के मरे तो क्या. जो मनुष न्याव की रीत से चलते हैं, कुछ हो, और राह पर पांव नहीं रखते. क्या हुआ जो मोटे हुए, या दुबले. गरज़ जिस के शरीर से उप कार नहो, उसका जीना निर्फल है. और बिराने अर्थ जिन का जीव है उन्हों का जीना सुफल है. यों तो कुत्ता कौवा भी अपना जी पालता है. जो ब्राह्मण, गौ, मिच, स्त्री की खातिर बल्कि बेगाने वास्ते जी देते हैं सो निश्चय सदा बैकुंठ बास करते हैं.

गरुड़ बोला जग में सब अपनी जान की रच्छा करते हैं; और अपना जी दे दूसरे के जी को बचानेवाले संसार में बिरलेही होते हैं. यह कह गरुड़ बोला बर मांग. मैं तेरे साहस पर संतुष्ट हुआ. यह सुनके जीमूत-बाहन ने कहा हे देव! जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्न हुए हो, तो अब नागों को न खाओ; और जो खाये हैं उनहें जिला दो. यह सुन गरुड़ ने, पाताल से अमृत लाकर, सापों के हाड़ों पर छिड़का कि फिर वे जी उठे. और इस से कहा ऐ जीमूतबाहन! मेरे प्रसाद से तेरा गया हुआ राज फिर तुझे मिलेगा.

यह वर दे गरुड़ अपने स्थान पर गया; और संख चूड़ भी अपने धाम को. और जीमूतबाहन भी वहां से चला, कि राह में उसका सुसरा और सास और स्त्री मिली. फिर उन समेत अपने बाप पास आया. जब यह अहवाल सुना तो उसके चचा और चचेरे भाई बल्कि सारे कुटुंब के लोग मिलने को आये, और पांवों पड़ इन्हें ले जा राज पर बिठाया.

इतनी कथा कह बैताल ने पूछा ऐ राजा! इन में से सत किसका अधिक ठ्आ? राजा बीर बिक्रमाजीत बोला संखचूड़ का. बैताल ने कहा किस तरह. राजा ने कहा गया ठ्आ संखचूड़ फिर जीव देने को आया और गरुड़ के खाने से इसे बचाया. बैताल बोला कि जिसने पराये लिये अपनी जान दी, उसका सत क्यों न अधिक ठ्आ. राजा ने कहा जीमूतबाहन जात का छत्री है. उसे जी देने का अभ्यास हो रहा है. इससे उसे जान देनी कुछ कठिन न मअलूम दी. यह सुन बैताल फिर उसी पेड़ में जा लटका. और राजा वहां जा उसे बांध कांधे पर रख ले चला.

सोलहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा बीर बिक्रमाजीत! चंद्रशेखर नाम एक नगर है. कि वहां का रहनेवाला रतनदत्त(१)

(१) रत्नदत्त.

सेठ था. उस के एक बेटी थी. उसका नाम उन्मादिनी था. जब वह जोबनवती ठ्ई तब उसके बाप ने वहां के राजा से जाकर कहा महाराज! मेरे घर में एक कन्या है. जो आप को उसकी चाह हो, तो लीजिये; नहीं मैं और किसी को दूं.

यह सुन राजा ने दो तीन प्राचीन दासों को बुलाकर कहा इस सेठ की पुत्रीके लच्छण जाके देख आओ. वे राजा की आज्ञा से सेठ के घर आये; और उस लड़की का रूप देख सभी मोहित ठ्ए. ठ्स ऐसा गोया अंधेरे घर का उजाला, आंखें मृग की सी, चोटी नागिन सी, भवें कमान सी, नाक कीरकी सी, बत्तीसी मोती की सी लड़ी, होंठ कंदूरी की मानंद, गला कपोतका सा, कमर चीते की सी, हाथ पांव कोमल कमल से; चंद्रमुखी, चंपाबरनी, हंसगवनी, कोकिल बैनी; जिसके रूप को देख इंद्र की अप्सरा भी लजाय.

इस प्रकार की सुन्दरी सब सुलच्छणभरी देख, उन्हों ने आपस में बिचार किया, ऐसी जो नारी राजा के घर में जायगी, तो राजा इसके अधीन होयगा, और राजकाज की चिन्ता कुछ न करेगा. इससे बिहतर यह है, कि राजा से कहिये वह कुलच्छणी है, आप के योग नहीं. यह बिचार कर, वहां से राजा के पास आकर, उन्हों ने यह निवेदन किया महाराज! उस कन्या को हमने देखा; वह आप के लायक़ नहीं. यह सुनके राजा ने सेठ से कहा मैं ब्याह न करूंगा. फिर सेठ ने अपने घर आ, क्या काम